Environmental Economy

Q.No. 1 पर्यावरण अर्थव्यवस्था के दो तरफा सम्बन्ध की विवेचना करें?

Ans :-पर्यावरण दो शब्दो 'परि' तथा 'आवरण' से मिलकर बना है। जिसमें परि शब्द का आशय चारों ओर से' तथा आवरण शब्द का अर्थ 'घेरे या ढके हुए' से होता है। पर्यावरण से आशय मानव अथवा किसी जीवधारा चारों ओर पाए जाने वाले उस, आवरण से है जिसमे रहकर वह जीव विशेष रूप से अपना जीवनयापन करता है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण से आशय उस समूची भौतिक व जैविक व्यवस्था से है, जिसमें जीवधारी निवास करते हैं तथा वृद्धि, कर अपनी स्वाभाविक प्रवृतियों का विकास करते है। "जीवो के पारिस्थितिकी कारको का योग पर्यावरण है" A. G. Tansley के शब्दों में "प्रभावकारी दशाओं का वह सम्पूर्ण योग जिसमे जीवधारी निवास करते हैं पर्यावरण कहलाता है"

पर्यावरण अर्थव्यवस्था संतुलन दो तरफा

सम्वन्ध : → मानवीय आर्थिक क्रियाकलापों ने प्रकृति के विभिन्न घरको में हस्तक्षेप कर पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ दिया हैं। पूंजी प्रधान औधोगीकरण की क्रिया ने पर्यावरण को क्षतिग्रस्त करने में पूर्ण पति भूमिका निभाई है। पर्यावरण अपघटन का औधो आँधी- गौकरण, नगरीकरण तथा विस्तृत एवं सघन, कृषि से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। औधोगीकरण न वायु एवं जल प्रदुषण तथा औद्योगिक अपशिष्ट प्रदूषण का जन्म दिया औद्योगीकरण से ही नगरीकरण का विस्तार हुआ है जिसक फलस्वरुप आवास की समस्या, परिवहन जन्य वायु एवं बवनी प्रदुषण की समस्या एवं भल-जल तथा कूड़ा-करकट निस्तारण की समस्या उत्पन्न हो गई है। औद्योगीकरण की उस प्रक्रिया ले प्राकृतिक संसाधनों कच्चे साल, तथा ऊर्जा के पारिम्परिक स्रोतो का बड़ी तेजी से विदोहन किया है। इससे पर्यावरण एवं पारिस्थितिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। तकनिकी परिवर्तन ने 'उपयोग करो और फेको' की दशा को जन्म दिया हैं जिसने प्रदुषण की समस्या को और अधिक गम्भीर बना दिया है। आज यह धारणा बलवती होती जा रही है कि प्रौद्योगिकीय प्रगति के माध्यम से मनुष्य द्वारा प्रकृति पर, विजय करने की जालया पृथ्वी से समस्त जीव-जन्तुओं को विनष्ट कर सकती है।"

पर्यावरण प्रदुषण तथा आर्थिक क्रियाकलापों के वीच सम्बन्ध को पदार्थ संतुलन मॉडल द्वारा निभवत किया जा सकता है। पदार्थ संतुलन मॉडल मे पर्यावरण को एक वडे आवरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो सम्पूर्ण आर्थिक प्रणाली को चारों ओर से घंटे हुए है। इसका अर्थव्यवस्था से बूढी सम्बन्ध होता है जो गर्मरच शिशु का उसकी मां से होता है।

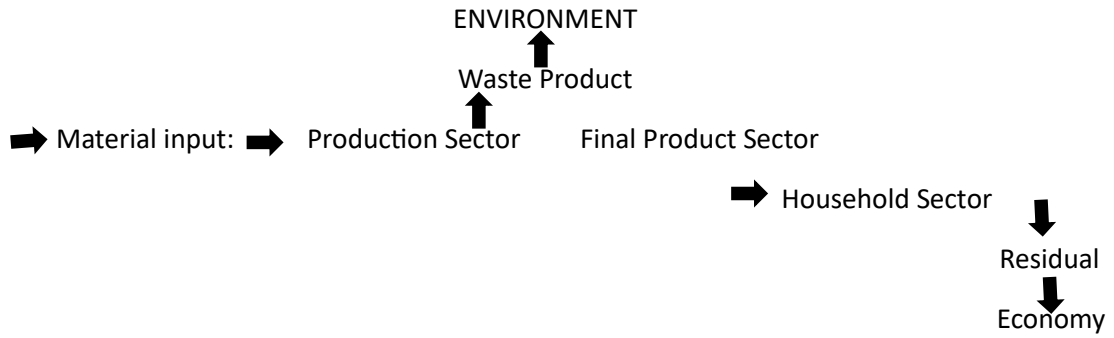

प्रदुषण एवं आर्थिक क्रियाकलाप

चित्र में उत्पादन क्षेत्र तथा घरेलू क्षेत्र के बीच पारम्परिक चक्रीय प्रवाह को प्रदर्शित किया है। पर्यावरण से प्राकृतिक संसाधनों एवं कच्चे माल का प्रवाह आग तो के रूप में उत्पादन क्षेत्र की ओर होता है जहाँ पर उन्हे उपयोक्ता वस्तुओ में परिवर्तित किया जाता है। औद्योगिक क्रिया से उत्पन्न हानिकारक निष्प्रयोज्य पदार्थ (waste material), प्रदुषित जल, जहरीली गैसे, रासायनिक अवशेष, धूल, राख, धुआँ आदि का प्रवाह वातावरण में होता है। उपभोक्ता बलुओं का प्रवाह घरेलू क्षेत्र की ओर होता है। उसके बाद अपशिष्ट (Residual) के रूप में इसका प्रवाह पुनः पर्यावरण की

ओर होता है। यह अपशिष्ट उप-उत्पाद रूप ये होते हैं जो घरेलू क्षेत्र की उपयोग क्रियाओं द्वारा उत्पन्न होते हैं इस तरह उत्पादन एवं उपभोग

क्षेत्र से अपशिष्टों का परवाह पर्यावरण की ओर होता है इस प्रकार के भौतिक प्रवाह भातिका का आधारभूत नियम का पालन करते है जहां पदार्थों के संरक्षण की बात कही गई है।

एक ऐसी अर्थव्यवस्था जहां आयात-निर्यात का समावेश नहीं है तथा शुद्ध पूंजी स्टॉक का संचयन नहीं होता में प्रकृति एवं पर्यावरण को वापस किए जाने वाले अपशिष्ट की यात्रा, आधारभूत ईंधन, खाद्यान, खनिज तथा अन्य प्रकार के कच्चे माल जा उत्पादन के उपादान के रूप में प्रयुक्त होकर उत्पादन क्रिया में भाग लेते हैं, के बराबर होती है। इस अवधारणा को पदार्थ संतुलन सिद्धांत कहा जाता है।

पर्यावरण अर्थव्यवस्था से जुडे मुद्दे : →

पदार्थ, संतुलन, सिद्धांत इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि पर्यावरण से अर्थव्यवस्था को प्राप्त होने वाले पदार्थों की यात्रा बराबर होनी चाहिए अर्थव्यवस्था अपशिष्ट पदार्थों की यात्रा के, परंतु विभिन्न प्रकार की विसंगतियों के फलस्वरूप यह संतुलन स्थापित नहीं हो पाता है जिसके कारण प्रश्न खडे होते है। की आर्थिक विकास की प्रक्रिया तथा मानव निर्मित एवं प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग से सम्बन्धित पर्यावरण अर्थव्यवस्था से जुडे निमलिखित मुद्दे उठाए जा सकते हैं -

(1) क्या बाजार व्यवस्था पर्यावरणीय विवाद का निपटारा कर सकती है।

(2) क्या बाजार व्यवस्था विभिन्न प्रकार क के पर्यावरणीय प्रभाव की देखभाल कर सकती है।,

3.) क्या बाजार व्यवस्था धन आयु का पुनर्वितरण कर सकती है जिससे कि समता एवं सामाजिक न्याय की स्थापना की जा सके जिसे सामाजिक पर्यावरण का साम्य माना जाता है।

(4) भावी पीढ़ियों की वरीयताओं को किस तरह सम्मिलित किया जाय।

(5.) पुनरुत्पादनीय संसाधनों का अनुकूल उपयोग किस तरह किया जाए?

6. पर्यावरणीय परियोजनाओं के असांकन हेतु कौन-सी समय बहादर उपयुक्त होगी?

7. बाह्यताओं का मूल्याकन किस तरह किया जाए।

8. सामाजिक, आर्थिक दाचे तथा सांस्कृतिक विरासत पर के को कैसे मापा जाए? प्रदुषण प्रभाव अब 'जये अनि अधि

9. लोग अपने अधिमानों को व्यक्त कसे के लिए किन आदर्श मूल्यों का प्रयोग करने करते हैं

(10.) क्षतिपूर्ति दरों का निर्धारण किस तरह किया जाए?

पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था की सम्बद्धता से सम्बन्धित उपर्युक्त युद्धे अत्यधिक महत्वपूर्ण - इन युद्धो पर विचार किए बिना अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना कठीन होगा। पर्यावरणीय असंतुलन की दशा में किसी भी तरह का आर्थिक विकास सामाजिक कल्याण फलन के प्राप्ति की प्रक्रिया को अवरुद्ध कर देगा।